डॉ० नित्यानन्द पासवान
सहायक प्राध्यापक, के० पी० कॉलेज मुरलीगंज
Economics - MJC 1

BNMU

समष्टि (व्यापक) अर्थशास्त्र, आर्थिक अध्ययन के विश्लेषण का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है। इसके अन्तर्गत ऐसे विशाल समूहों का अध्ययन किया जाता है जो सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को प्रदर्शित करते हैं। जैसे- कुल रोजगार, कुल आय, कुल उत्पादन, कुल विनियोग, कुल बचत, कुल उपभोग, कुल पूर्ति, कुल माँग, सामान्य कीमत स्तर इत्यादि।

वास्तव में अंग्रेजी का शब्द "मैक्रो" ग्रीक भाषा के शब्द "मैक्रोस" (Makros) से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है विशाल अथवा व्यापक यही कारण है कि व्यापक अर्थशास्त्र में आर्थिक क्रियाओं का सामूहिक रूप से अध्ययन करते हैं।

प्रो० बोल्डिंग के अनुसार "व्यापक अर्थशास्त्र व्यक्तिगत मात्राओं का अध्ययन नहीं करता बल्कि इन मात्राओं के समूह का अध्ययन करता है। व्यक्तिगत आयों का नहीं अपितु राष्ट्रीय आय का, व्यक्तिगत कीमतों का नहीं बल्कि सामान्य कीमत स्तर का, व्यक्तिगत उत्पादन का नहीं बल्कि राष्ट्रीय उत्पादन का होता है।"

प्रो० शुल्त्ज के अनुसार, "व्यापक अर्थशास्त्र का मुख्य यन्त्र राष्ट्रीय आय विश्लेषण है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि व्यापक अर्थशास्त्र में एक देश की राष्ट्रीय आय के निर्धारक तत्वों तथा आर्थिक उतार-चढ़ावों के कारणों का अध्ययन किया जाता है।

BNMU

जे० एम० केन्स की पुस्तक "The General Theory of Employment Interest and Money (1936) के प्रकाशन के बाद व्यापक अर्थशास्त्र के अध्ययन को अधिक प्रोत्साहन मिला।

समष्टि अर्थशास्त्र की विशेषताएँ !→

(1) समष्टि इकाइयों का अध्ययन !- समष्टि अर्थशास्त्र में समष्टि इकाइयों जैसे:- राष्ट्रीय आय, कुल उत्पादन कुल रोजगार, सामान्य कीमत स्तर आदि का अध्ययन किया जाता है।

(2) सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित :→ समष्टि अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित नीतियों का अध्ययन किया जाता है।

(3) समष्टि आर्थिक चर !→ समष्टि आर्थिक चर समष्टि अर्थशास्त्र की विषय सामग्री के महत्वपूर्ण भाग होते हैं। समष्टि चर वे चर हैं जिसका सम्बन्ध सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर से होता है।

कुछ महत्वपूर्ण समष्टि आर्थिक चर हैं:→ राष्ट्रीय बचत, और विनियोग, सकल राष्ट्रीय उत्पाद, राष्ट्रीय आय, कुल रोजगार, समग्र माँग, समग्र पूर्ति आदि।

(4) समष्टि उपकरण → विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समष्टि अर्थशास्त्र में जिन साधनों का उपयोग किया जाता है, उन्हें समष्टि उपकरण कहते हैं।

समष्टि अर्थशास्त्र के क्षेत्र में सम्मिलित मुख्य अध्ययन निम्न विषयों पर आधारित हैं।

(1) आय एवं रोजगार का सिद्धांत :→
समष्टि अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय आय, उसकी विभिन्न अवधारणाओं तथा उसकी माप की विधियों का अध्ययन किया जाता है।

(2) सामान्य कीमत स्तर एवं मुद्रा स्फीति का सिद्धांत :- यह सिद्धान्त मुद्रा की पूर्ति के विभिन्न संघटकों और अर्थव्यवस्था पर उनके प्रभाव का अध्ययन करता है। यह सिद्धांत थोक मूल्य सूचकांक के निर्माण, सामान्य कीमत-स्तर में परिवर्तन अर्थात् मुद्रा स्फीति और अवस्फीति का अध्ययन किया जाता है।

(3) व्यापार चक्रों के सिद्धांत :→
प्रत्येक अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास की गति में परिवर्तन आता रहता है। अर्थव्यवस्था में कभी तेजी और कभी मंदी की स्थिति उत्पन्न होती है। उसे व्यापार चक्र कहा जाता है। समष्टि अर्थशास्त्र में इन व्यापार-चक्रों एवं उससे जुड़ी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

(4) आर्थिक विकास का सिद्धांत :→
समष्टि अर्थशास्त्र में विकास अर्थात् प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में होने वाली वृद्धि से संबंधित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। इसी कारण वर्तमान समय में आर्थिक विकास समष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है।

(5) वितरण का समष्टि सिद्धांत :→
समष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था के

वितरण से समष्टि सिद्धांतों का भी अध्ययन किया जाता है। इस सिद्धांत से ज्ञात होता है कि राष्ट्रीय आय में उत्पादन के विभिन्न साधनों का हिस्सा किस प्रकार और कितना निर्धारित होता है अर्थात् मजदूरों को कितना भाग प्राप्त होता है तथा उद्यमियों तथा भूमिपतियों को कितना भाग प्राप्त होता है।

=0=0=0=